याकूब

याकूब का पत्र

लेखकः

न्यू टॅस्टामॅन्ट में याकूब नाम के तमाम लोग थे।

एक था यीशु के शिष्य यूहन्ना का भाई (मत्ती 10:2)

दूसरा था यहूदा का भाई या पिता जो यीशु मसीह के आरम्भिक शिष्यों में से था (लूका 6:16 और टिप्पणी देखें)।

तीसरा था यीशु मसीह का छोटा और आधा भाई (मत्ती 13:55)। ऐसा माना जाता है कि इस पत्री का लेखक यही याकूब था। वह यरूशलेम के चर्च के अगुवों में से एक था (प्रे.काम 15:13)

समयः

शायद 45 और 50 ए.डी. के बीच में

विषयः

अपने मत या विश्वास का सबूत अपने बर्ताव या व्यवहार से देना। समस्याओं के बावजूद डावॉडोल न होना, बाईबल की बातों को मानना, पक्षपाती न होना, स्नेह, अच्छे काम, सही बोलना आदि सच्चे विश्वास के सबूत हैं।

1 परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के
दास याकूब की तरफ़ से उन बारह
गोत्रों को जो जगह-जगह फैले हुए हैं,
शान्ति।

2 हे मेरे भाइयो-बहनो, जब तुम तरह-तरह
की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरी
खुशी की बात समझो, 3 यह जानकर कि
तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज
की शुरूआत होती है। 4 लेकिन धीरज को
अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और
सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी तरह की
कमी न रहे।

5 अगर तुम में से किसी को बुद्धि की कमी
हो, तो परमेश्वर से माँगे, उसे मिलेगी।
वही हैं जो सब को बिना किसी नाराज़गी
के उदारता से बुद्धि देते हैं। 6 लेकिन बिना

1:1 "प्रभु"- जिसने जी उठने के पहले भरोसा नहीं किया था, जी उठने के बाद किया। देखें 2:1.

"याकूब"- बाईबल के दूसरे हिस्से में इस नाम के कई व्यक्ति थे (मत्ती 10:2-3; मरकुस 15:40; लूका 6:16; मत्ती 13:55)। ऐसा लगता है, कि यह याकूब यीशु का आधा भाई था, और इसी ने यह पत्र लिखा था। यीशु मसीह के समय में न याकूब ने, न उसके भाइयों ने यीशु के मुक्तिदाता होने पर विश्वास किया। लेकिन यीशु मसीह की मौत और जी उठने के बाद उन्हों ने किया (प्रे.काम 1:14)। बाद में याकूब यरूशलेम चर्च में एक अगुवा भी बना (प्रे.काम 12:17; प्रे.काम 15:13; गल. 1:9)।

"जगह-जगह"- इस्त्राएल में बारह गोत्र थे। यहूदियों के लिए दूसरा नाम बारह गोत्र हो गया। लेकिन याकूब मसीहियों को लिख रहा था। इसलिए हम कह सकते हैं कि उसने यहूदियों को लिखा जो मसीही हो चुके थे, इस्त्राएल और बाहर के देशों में।

1:2 "परीक्षाओं"- यूनानी भाषा में परखा जाना था प्रलोभन में पड़ना दोनों ही है। यहाँ संदर्भ के हिसाब से परख ज़्यादा मायने रखता है।

"खुशी की बात समझो"- कठिन समयों में से गुज़रते समय हमारा रवैया कैसा है, यह खास बात है। अगर हम कायल हैं कि उनका परिणाम अच्छा होगा और हमारी जिंदगी में अच्छे बदलाव होंगे, तो हम इन्हें खुशी का कारण समझेंगे। यूहन्ना 16:33; रोमि. 5:3-5; 2 कुरि. 8:2. यह परमेश्वर चाहते हैं कि उनके लोग विश्वास और नैतिक मूल्यों में मजबूत हों। वह चाहते हैं कि हम "सिद्ध और पूर्ण" हों (इफ़ि. 4:13-15 से तुलना करें)। इस जीवन में कुछ भी क्यों न हो वह चाहते हैं, कि हम धीरज से सहें। परीक्षाओं को परमेश्वर हम में सब्र उत्पन्न करने के लिए इस्तेमाल कर लेते हैं देखें भजन 66:10-12.

1:3 "जानकर"- यह आवश्यक बात है। यह जानना कि परीक्षा का परिणाम फ़ायदेमंद है, हमें धीरज से सहने में मददगार होगा।

"धीरज"- कुल. 1:11; 2 थिस्स. 1:4; 2 तीमु. 2:12; 3:10; इब्रा. 12:10; 1 पतर. 2:20. इस शब्द का इस्तेमाल कर के याकूब कहना यह चाहता है कि मसीह पर विश्वास करते हुए आगे बढ़ते जाएँ, चाहे कुछ भी क्यों न होता रहे। इस गुण के न होने पर हमें परीक्षाओं से वह फ़ायदा नहीं मिलेगा, जो मिलना चाहिए। क्या हम उन बातों के लिए खुश नहीं हो सकते हैं, जो हमें बचपने से निकालती हैं और यीशु के लिए जीने में मदद करती हैं?

1:4 "सिद्ध"- यूनानी शब्द का मतलब है" - पूरा विकसित परिपक्व, बिना कमी का, आदि।

1:5 जिन परीक्षाओं का हम सामना करते हैं, हमारा परखा जाना आदि, से हम घबरा सकते हैं। हम सवाल कर सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है। अपनी बुद्धि से हम न ही जवाब पा सकेंगे और न ही समझ पाएँगे कि उनका फ़ायदा कैसे उठाएँ। हमे परमेश्वर की बुद्धि की ज़रूरत है कि परीक्षाओं का सामना कैसे करें। हम यही बिनती करें अपने लिए और दूसरों के लिए। इस में परमेश्वर को खुशी होगी। कुल. 1:9; 2:3; इफ़ि. 1:17; 1 कुरि. 1:31; 2:6-10; दानि. 2:20-21; नीति. 1:20; 2:6; 8:1; भजन 51:6; 111:10; याकूब 3:17 में इसके बारे में बताता है।

"उसे मिलेगी"- यह झूठ न बोलने वाले प्रभु का वायदा है तीतुस 1:2.

"बिना...नाराज़गी"- जब हम प्रभु के पास आते हैं, वह शिकायत नहीं करते हैं। हमारी अयोग्यता या हमारे सही तरीके से प्रार्थना नहीं करने की वजह से वह हमें मना नहीं करते हैं। हम हिम्मत के साथ उनके प्यार और कृपा के कारण उनके पास आ सकते हैं - इब्रा. 4:15-16.

"उदारता"- मत्ती 7:9-11; 2 कुरि. 9:8; फ़िलि. 4:19; 1 तीमु. 6:17.

शक किए हुए विश्वास से माँगे, क्योंकि शक करने वाला समुद्र की लहर की तरह है, जो हवा से बहती और उछलती रहती है। 7शक्की इन्सान यह न समझे, कि उसे प्रभु कुछ देंगे। 8ऐसा व्यक्ति शक्की होने की वजह से अपने सारे जीवन में डावाँडोल रहता है।

9निम्न स्तर पर रहने वाला मसीही, अपने ऊँचे पद के लिए खुश रहे। 10जिस तरह से घास का फूल मुर्झा जाता है, अमीर आदमी की भी वही हालत होती है। 11जैसे ही सूरज अपनी तेज़ गर्मी के साथ उदय होता है, वह घास को सुखा देता है, और उसका फूल गिर जाता है, और उसकी खूबसूरती खत्म हो जाती है। इसी तरह अमीर भी अपने रास्ते पर चलते-चलते और अपने तरीके से जिंदगी बिताते हुए एक दिन खत्म हो जाएगा।

12वह इन्सान सच में आशीषित है जो परीक्षा में टिका रहता है, क्योंकि खरा निकलने पर वह जिंदगी का वह मुकुट पाएगा जिस का वायदा यीशु ने अपने प्रेम करने वालों को दिया है।

1:6-8 "विश्वास से माँगे"- अगर हम अपनी प्रार्थना का जवाब चाहते हैं, एक बात बहुत ज़रूरी है। इब्रा. 11:6. भरोसा रखकर की गयी प्रार्थना सब बातों को संभव करती है (मरकुस 9:23; 11:23-24)।

"शक करने वाला समुद्र की लहर"- संदेह या शक। अविश्वास का मतलब है परमेश्वर को झूठा ठहराना (1 यूहन्ना 5:9-10)। दूसरे शब्दों में यह इस तरह है कि जो प्रभु करने की प्रतिज्ञा करते हैं, नहीं करेंगे। यह परमेश्वर के चरित्र पर शक करना है। ईश्वर की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में, विश्वास कहता है, "परमेश्वर ऐसा करेंगे।" अविश्वास कहता है "वह नहीं करेंगे" । शक कहता है वह कर भी सकते हैं और नहीं भी। परमेश्वर और उनके वचन के बारे में, शक करने वाला डाँवाडोल रहता है। वह हमेशा दो दिशाओ में खिंचा रहेगा। वह अपने ख्यालों, नियत, लक्ष्य और ईश्वर की इच्छा के संदर्भ में एक मन नहीं रहेगा। शक्की होने की वजह है उसके मन का बटा होना देखें दाऊद की प्रार्थना भजन 86:11 में। कभी न कभी हर इन्सान शक करता ही है। हमें इस परीक्षा का मुकाबला करना चाहिए और भरोसा रखना चाहिए कि प्रभु वह सब करेंगे जिसका वायदा उन्हों ने किया है। अब्राहम इस विषय में अच्छा उदाहरण है रोमि. 4:18-21 शक का इलाज क्या है? रोमि. 10:17; परमेश्वर के वायदों और चरित्र पर मनन भजन 1:2-3; उनके प्रति और उनकी मर्ज़ी के प्रति समर्पण (रोमि. 12:1-2)।

1:9 "निम्न स्तर"- जिन लोगों को दुनिया कुछ भी नहीं समझती है, जो अनपढ़ गरीब हैं, उन्हें सृष्टिकर्ता ने मसीह में ऊँचाइयों पर रखा है। उन्हें अपनी संतान बनाने के साथ एक बड़ा भविष्य दिया है (यूहन्ना 1:12-13; रोमि. 8:29-30; इफ़ि. 2:6-7)। मसीह मे गरीब-अमीर का बँटवारा खतम हो गया है। गुलाम-मालिक, शिक्षित-अनपढ़ का फ़र्क खतम हो गया है। (1 कुरि. 12:13; गल. 3:28; कुल. 3:11)। निर्धनों को अपनी इस ऊँची स्थिति का ध्यान रखकर खुश और सन्तुष्ट रहना चाहिए।

1:10 "अमीर आदमी"- मसीह में निर्धन का जो पद है, वही अमीर का भी है। लेकिन मसीह के द्वारा उसने अपनी मरणशीलता और जर्जरता को समझ लिया है। (जो पहले नहीं सीखा था)। वह जान सकता है कि नम्र बनना ही इज़्ज़त पाने के लिए ज़रूरी है (मत्ती 18:4; 23:12) उसने अपनी पापमय हालत को जान लिया है और इस सच्चाई को भी, कि बिना प्रभु की कृपा वर्तमान या भविष्य में उसे कुछ भी अच्छा नहीं मिल सकता है। इसी से उसे खुशी और आनन्द ढूँढना चाहिए। हर वह सच्चाई जो हमें परमेश्वर के सामने दीन करती है, उसमें हमें प्रसन्न होना चाहिए। देखें 4:6; 1:11; भजन 103:15; यशा. 40:6-8; 1 पतर. 1:23-25 से तुलना करें।

1:12 "आशीषित"- भजन 1:1; 119:1; मत्ती 5:3-12 से तुलना करें। परखे जाने से हमें अभी और भविष्य में फ़ायदा है - पद 2-4; 2 कुरि. 5:17.

"मुकुट"- 2 तीमु. 4:8 का नोट्स देखें। 1 कुरि. 9:25; फ़िलि. 4:1; प्रका. 3:11; 4:10. प्रका. 2:10 में फिर से "जीवन के मुकुट" के बारे में हैं। यह फिर उन्हीं के लिए है जो ईमानदारी और धीरज से परीक्षाओं में खरे उतरेंगे। दूसरे शब्दों में जिनके पास सच्चा विश्वास है, वे अपने धीरज से अपने विश्वास का सबूत देते हैं।

"प्रेम करने वालों"- समस्याओं के बीच प्रेम

13जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह
न कहे, कि परमेश्वर मेरी परीक्षा कर
रहे हैं। बुरी बातों में परमेश्वर किसी की
परीक्षा नहीं करते हैं और न ही वे किसी
की परीक्षा लेते हैं। 14हर इन्सान अपनी
वासना से खिंचकर और फँसकर परीक्षा
में पड़ता है। 15फिर वासना गर्भवती होकर
पाप को पैदा करती है और जब पाप बढ़
जाता है तो मौत (बर्बादी) तक पहुँचाता है।
16हे मेरे भाइयो-बहनो, गुमराह मत हो
जाना। 17हर एक अच्छा और उत्तम ईनाम
आसमान की ज्योतियों के बनाने वाले
परमेश्वर की ओर से है, और वह न बदलने
वाले हैं। 18परमेश्वर ने अपनी ही इच्छा
से सच्चे वचन के द्वारा हमें नया जन्म दिया
ताकि हम उनकी बनायी गयी सभी चीजों
में से एक तरह से पहले फल (किश्त) हों।
19हे भाइयो-बहनो, यह तुम्हें मालूम है
इसलिए हर एक इन्सान सुनने में दिलचस्पी
दिखाने वाला और बोलने में धीमा और

ही लोगों को बने रहने के लिए प्रेरित करता है। (1 कुरि. 13:6) यह बना रहना ही प्रेम का सबूत है।

1:13 प्रभु हमारी परख कर सकते हैं, लेकिन बुरा करने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं (उत्पत्ति 22:1; भजन 66:10-12)। मत्ती 6:13 की बिनती का जवाब देने में प्रभु की दिलचस्पी है।

"बुरी बातों में...परीक्षा"- परमेश्वर किसी भी बुराई या दुष्टता के बारे में परीक्षा नही लेते हैं। वह हमेशा सब तरह की बुराई से नफ़रत करते हैं - लैव्य. 20:7; व्यव. 12:31; भजन 11:5; नीति. 6:16-19.

1:14 जैसी पवित्रता परमेश्वर में है, जन्म से हमारे पास वैसी पवित्रता नहीं है। हमारा पुराना स्वभाव बिल्कुल गिर चुका है, भ्रष्ट है इसीलिए बुराई की तरफ़ हम खिंचे चले जाते हैं (गल. 5:16-17; रोमि. 7:15-20; इफ़ि. 4:22-24)। शैतान यह सब अच्छी तरह से जानता है और हमारे सामने लालच लाता है। (1 थिस्स. 3:5)। यदि हम परीक्षा में लुढ़क जाते हैं, तो हमें परमेश्वर को दोषी नहीं ठहराना चाहिए तुलना करें 1 कुरि. 10:13.

1:15 बुराई का आखिरी परिणाम आत्मिक मौत है, तुलना करें उत्पत्ति 2:17; रोमि. 5:12; 8:6. सभी बुरे कामों की शुरूआत अभिलाषा में है (उत्पत्ति 3:6; 2 पतर. 1:4; 1 यूहन्ना 2:16)। जो शक्ति प्रभु हमें देते हैं, उसकी मदद से हमारी अभिलाषाओं के युद्ध में हमें लड़ना चाहिए और इसके पहले कि बुराई कर डाली जाए अभिलाषा पैदा होती है।

1:16 "गुमराह मत हो जाना"- पद 22; 1 कुरि. 6:9; गल. 6:7; इफ़ि. 5:6; 1 यूहन्ना 1:8.

1:17 परमेश्वरीय दान सिद्ध होते हैं। उन में दुष्टता की बू तक नहीं आती है। अगर लोग परमेश्वरीय दान का दुरूपयोग करते हैं और उसके सहारे बुरा करने का अवसर ढूँढते हैं, तो गलती परमेश्वर की नहीं, इन्सान की है। "ज्योतियों के बनाने वाले" परमेश्वर हर तरह की रोशनी के कर्ता हैं - चाहे वह सचमुच की है या आत्मिक (उत्पत्ति 1:3,14-16; लूका 1:78-79; यूहन्ना 1:4-5; 3:19; 2 कुरि. 4:6)।

"न बदलने वाले"- गिनती 23:19; 1 शमू. 15:29; मला. 3:6; इब्रा. 1:10-12; 13:8. परमेश्वर हमेशा तक सिद्ध हैं। उनके चरित्र में न कुछ जोड़ा जा सकता है, न कम किया जा सकता है।

1:18 यहाँ इन्सान के लिए सृष्टिकर्ता की तरफ़ से सब से अच्छा और सर्वोत्तम वरदान है।

"जन्म दिया"- नया जन्म दिया और अपनी संतान बनाया - यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; 1 पतर. 1:23. यह बुराई और मौत से छुड़ाने का परमेश्वरीय तरीका था (पद 15)।

"पहले फल"- रोमि. 11:16; 1 कुरि. 15:20,23; प्रका. 14:4. एक बड़ी फ़सल जो आने वाली है, विश्वासी उसके पहली किश्त हैं।

1:19-20 नए जन्म के विचारों से वह उन विचारों की तरफ़ मुड़ता है, जो उस अनुभव को हमारे जीवन में उत्पन्न करना चाहिए।

"सुनने में दिलचस्पी दिखाने वाला"- याकूब शायद कहना चाहता है कि प्रभु की बातें सुनने में या, जो दूसरों को कहना है, वह सुनने में। "बोलने" - 3:1-8; नीति. 10:19; 13:3; 17:28; 29:20; मत्ती 12:36-37. जो लोग बहुत बोलते हैं, बहुत बार बेकार की और नुकसानदायक बातें बोल डालते हैं। जो उन्हें टालना चाहिए, वे सुन नहीं पाते हैं।

गुस्से में धीमा हो। 20इसलिए कि जो कुछ परमेश्वर की निगाह में ठीक है वह सब तुम्हारे गुस्से में नहीं किया जा सकता है। 21इसलिए तुम्हारी जिंदगी में जो बुराई और सड़ाहट है, उसे दूर करके उस संदेश को नम्रता से अपनाते जाओ जो तुम्हारे मनों में बोया जाता है। यह संदेश तुम्हारे प्राण (बुद्धि, इच्छा शक्ति और भावनाओं) के विकास में मददगार साबित हो सकता है।

22बाइबल से सीखी बातों के अनुसार किया करो। सुनकर, उसके हिसाब से न करने वाले अपने आपको धोखा देते हैं। 23क्योंकि जो कोई वचन (बाइबल) की बातों का सुनने वाला है और वैसा करने वाला नहीं, वह उस इन्सान की तरह है जो अपना चेहरा शीशे में देखता है। 24देखकर चले जाने के बाद वह भूल जाता है कि मैं कैसा दिख रहा था। 25लेकिन जो इन्सान परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार करना भूलता नहीं, उसके काम का परिणाम फ़ायदेमंद होगा।

26अगर कोई व्यक्ति अपने को धार्मिक समझता है, लेकिन अपनी जीभ पर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में है और उसका धार्मिकपन बेकार है। 27हमारे परमेश्वर पिता की निगाह में शुद्ध स्थायी धार्मिकपन (भक्ति) यह है कि अनाथों और विधवाओं की परेशानियों में उनकी मदद करें और

"गुस्से में धीमा"- मत्ती 5:22; इफ़ि. 4:26; नीति. 16:32. इन्सान का गुस्सा चाहे वह सही गुस्सा भी क्यों न हो, ऊँचे नैतिक स्तर को न ही स्थापित कर सकता है, न ही बढ़ा सकता है।

1:21 "बोया जाता है"- वह परमेश्वर का संदेश जो हमारे मनों में बोया जाता है। मत्ती 13:3-9; 18:22 से तुलना करें। यदि हमारे मन में बोया गया प्रभु का वचन फ़सल देता है, तो हमें दीनता से विश्वास से स्वीकार करना है, समर्पण करना है और इसे फलवंत होने देना है। हमारे मन में बसने वाली प्रभु की बातें हमें बदल सकती हैं, बचा सकती हैं।

1:22-24 मात्र बाईबल सुनना लेकिन वैसा न करना बेकार है। जितना हम बिना किए सुनते जाएँगे, दोषी ठहरेंगे। बीज बोने वाले के उदाहरण में चार तरह के लोग सुनते हैं (मत्ती 13:19-20,22,23) सिर्फ़ एक तरह के लोग फलवंत होते हैं। यहूदी खूब सुनते थे, याद करते थे, लेकिन वैसा करने में पीछे थे। (मत्ती 23:3; प्रे.काम 7:53; रोमि. 2:17-24) मत्ती 7:21-27 में यीशु उनकी शिक्षा का मानने के लिए ज़ोर डालते हैं। बहुत से मसीही कहलाने वाले हमेशा के लिए नाश हो जाएँगे, क्योंकि उन्हों ने मुक्ति पाने के लिए ज़रूरी शर्त को पूरा नहीं किया है। दूसरे बहुत से अपने प्रतिफल को खो देंगे, क्योंकि उन्हों ने यीशु की बातों को नज़रअंदाज किया।

1:23 "शीशे"- बाईबल एक शीशे (दर्पण) की तरह है। यही हमारी सही हालत दिखा देगी। लेकिन यदि हम हासिल किए गए ज्ञान का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो हमारा कोई फ़ायदा नहीं होगा और हम भूल जाएँगे।

1:25 मूसा के नियम से गुलामी आती है - प्रे. काम 15:10; गल. 5:1. विश्वासी उन नियमों से मुक्त हैं - रोमि. 6:14; 7:4. लेकिन यीशु के नियम से बंधे हैं - 1 कुरि. 9:21 यह नियम कृपा और प्रेम का है। जब हम इस तरीके को अपनाते हैं, तो आज़ादी महसूस करते हैं - ऐसी आज़ादी नहीं जो बुराई की तरफ़ ले जाती है, लेकिन जो बुराई से बचाती है। 1:26; पद 19; 3:2-12. बहुत से लोग हैं, जो अपनी जीभ पर अंकुश नहीं लगाते हैं। साफ़ है कि इसीलिए बहुत से लोग अपने आपको धोखा दे चुके हैं और बेकार की आराधना करते हैं।

1:27 परमेश्वर हर तरह की उपासना, वंदना और धर्म को ग्रहण नहीं करते हैं। मत्ती 15:8-9 तुलना भजन 50:7-21; यशा. 1:11-17. जिस तरह का धार्मिकपन प्रभु देखना चाहते हैं वह है कामों में प्रेम और पवित्रता, सिर्फ़ बातों में नहीं। कमज़ोर वर्ग के, असहाय और गरीब लोगों के लिए प्रभु ज्यादा फ़िक्रमंद हैं - निर्ग. 22:22; 23:11; लैव्य. 23:22; 10:18; 24:19; भजन 146:9; यशा. 1:17 साथ में गल. 2:10 भी। यदि हम प्रभु को खुश करना चाहते हैं हमें भी उनका ध्यान रखना चाहिए। परमेश्वर इस दुनिया की बुराई से नफ़रत करते हैं। यदि हम चाहते हैं कि हमारी आराधना को प्रभु स्वीकार करें, तो हमें भी बुराई से नफ़रत करनी चाहिए रोमि. 1:18; 2 कुरि. 6:17; 7:1; 1 पतर. 1:15-16; यहूदा 23.

दुनिया के भ्रष्टाचार से अपने आप को
बचाएँ।

2 मेरे भाइयो-बहनो, महान प्रभु यीशु के
अनुयायी होने के कारण किसी के
साथ पक्षपात न करो। 2उदाहरण के लिए
मान लो तुम्हारी सभा में एक व्यक्ति महँगे
कपड़े और गहने पहनकर और दूसरा गरीब
फटेहाल आता है। 3यदि तुम अमीर व्यक्ति
को बैठने की अच्छी जगह और सम्मान
देते हो, लेकिन गरीब को नीचे बैठने को
या खड़ा रहने को कहते हो, या कहते हो
कि यहाँ मेरे पाँव के पास बैठो, 4तो क्या
इस से साफ़-साफ़ पक्षपात नहीं दिखता है
कि तुम्हारे विचार कितने खराब हैं?

5मेरे भाईयो-बहनो, ध्यान से सुनो, क्या
इस दुनिया में जो गरीब लोग हैं, उन्हें
जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, परमेश्वर
ने विश्वास में अमीर होने के लिए और
प्रतिज्ञा किए हुए राज्य के वारिस होने के
लिए नहीं चुना है? 6इसके बावजूद तुम
गरीबों की बेइज़्ज़ती करते हो? क्या अमीर
लोग तुम्हारा शोषण नहीं करते हैं क्या वे
ही तुम्हें अदालत तक घसीट कर नहीं ले
जाते हैं? 7क्या जिस महान यीशु के नाम
से तुम कहलाते हो, उन्हीं की निन्दा वे
नहीं करते हैं?

8हाँ यह सच है कि जब बाइबल की इस
महान आज्ञा का शाही आदेश कि दूसरों से
अपने बराबर प्रेम करो का पालन तुम सच
में करते हो, तो अच्छी बात है। 9लेकिन
यदि तुम पक्षपात करते हो, तो गुनाह करते
हो, और व्यवस्था तुम्हें गुनाहगार ठहराती
है। 10वह इन्सान, जो एक को छोड़कर
सभी आज्ञाओं का पालन करता है, उस
इन्सान की तरह है जिसने पूरी आज्ञाओं

2:1-4 परमेश्वर पक्षपात नहीं करते हैं। मसीह को मानने वालों को चाहिए कि इन बातों में मसीह के कदमों पर चलें (रोमि. 2:11; 1 कुरि. 12:13; इफ़ि. 6:9; कुल. 3:11,25; 1 तीमु. 5:21; 1 पतर. 1:17)। यह दुख की बात है कि, इस बात को अक्सर नजर अन्दाज किया जाता है और आज्ञा नहीं मानी जाती है। याकूब (और याकूब के द्वारा पवित्र आत्मा की आवाज़) साफ़ बताती है कि पक्षपात "बुरे ख्यालों" से आता है। मसीह में हमें सब को समान स्वीकार करना चाहिए रोमि. 12:10,16. यीशु के लोगों में धन, शिक्षा, अच्छे वस्त्र न होना और किसी दूसरे वर्ग या जाति के होने पर भेदभाव नहीं होना चाहिए।

"महान प्रभु"- 1 कुरि. 2:8; लूका 2:11 में प्रभु पर नोट्स देखें। फ़िलि. 2:10-11

2:5 लूका 6:20 से तुलना करें। मत्ती 11:5; लूका 4:18; 1 कुरि. 1:26 भी देखें। यह भला है कि विश्वास में अमीर बनें बजाए इसके कि दुनिया की चीजों में।

"प्रेम रखते हैं"- 1:12 जो लोग प्रभु से प्रेम नहीं रखते हैं, मसीह के साथ मीरास के हकदार नहीं होंगे - 1 कुरि. 16:22; 1 यूहन्ना 4:8.

"वारिस"- मत्ती 5:5; 1 कुरि. 6:9; 15:50; गल. 5:21; इब्रा. 1:14; 6:12; प्रका. 21:7 और मत्ती 4:17 में परमेश्वर के राज्य पर नोट्स पढ़ें।

2:7 "नाम"- मसीह

2:8 "शाही आदेश"- लोगों के बीच बनाए रखने वाले सिद्धान्तों में यह सब से ऊँचा नियम है जो प्रभु के राज्य के सदस्यों के लिए है।

"दूसरों...प्रेम"- लैव्य. 19:18; मत्ती 19:19; 22:39; लूका 13:27; रोमि. 13:9-10; गल. 5:14.

2:9 "पक्षपात"- याकूब वापस हमें 1-4 पद तक ले जाता है। गरीबों को तुच्छ समझना और गरीब-अमीर में भेद करना बुरा है। इन्सान के लिए परमेश्वरीय सर्वश्रेष्ठ आज्ञा को तोड़ना है।

2:10 कोई भी जन आज्ञा को तोड़ने वाला है यदि वह सभी आज्ञाओं को मानता है लेकिन एक को तोड़ देता है। यदि वह प्रेम करने के हुक्म को नहीं मानता है तो बहुत बड़ी आज्ञा को तोड़ देता है और बड़ा अपराधी है। इसलिए हम देखते हैं कि पक्षपात करना एक छोटा गुनाह नहीं है। हम में से हर एक ने सृष्टिकर्ता नियम को कहीं न कहीं तोड़ा है। इसलिए पूरे नियम के तोड़े जाने का दण्ड हमें मिलना चाहिए (कुल. 3:10)। हम में से हर एक को यीशु के द्वारा माफ़ी चाहिए (रोमि. 3:9,19,23) "एक को छोड़" यूनानी शब्द का मतलब है लड़खड़ाना' लेकिन संदर्भ के हिसाब से याहवे की आज्ञा को न मानना। देखें 3:2 जहाँ वही शब्द का इस्तेमाल हुआ है।

को नहीं माना है। 11वही परमेश्वर जिसने कहा था, "व्यभिचार, मत करना", यह भी कहा कि "खून मत करना"। इसलिए यदि तुम ने किसी का खून कर डाला है, लेकिन व्यभिचार नहीं किया है तौभी तुम ने संपूर्ण आज्ञाओं को तोड़ डाला है।

12इसलिए जब कभी तुम कुछ कहते हो या करते हो, यह याद रखना कि तुम्हारा इन्साफ़ प्रेम के उस नियम से होगा, जो तुम्हें बरी करता है। 13इसलिए यदि तुम दूसरों पर दया नहीं दिखाते हो, तुम पर भी दया नहीं की जाएगी। यदि तुम दूसरों के प्रति दयालु रहे हो, तो तुम्हारे खिलाफ़ दिए गए परमेश्वर के फ़ैसले के ऊपर परमेश्वर की दया की जीत होगी।

14प्यारे भाइयो-बहनो, यदि तुम अपने कामों से अपने विश्वास का सबूत न दो, तो तुम्हारे विश्वास के दावे की क्या कीमत? उस तरह के विश्वास से किसी को कुछ फ़ायदा नहीं हो सकता। 15मान लो, कि किसी भाई या बहन के यहाँ खाने और कपड़े की किल्लत है, 16और तुम उन से कहो अपना ख्याल रखना, जाओ, परमेश्वर तुम्हें आशीष दें, अपनी देख-भाल ठीक से करना - लेकिन उनको खाना और कपड़ा न दो, तो ऐसे विश्वास से क्या फ़ायदा? 17देखा तुम ने, कि सिर्फ़ विश्वास रखना काफ़ी नहीं है। जिस विश्वास के साथ काम जुड़े हुए नहीं हैं, वह विश्वास नहीं कहलाएगा - वह बेकार और मरा हुआ है।

18कोई कह सकता है - "तुम्हारे पास सिर्फ़ विश्वास है लेकिन मैं कर्म को ज़्यादा मानता हूँ। तुम बगैर कर्म के अपना विश्वास दिखाओ, मैं अपने कर्म से अपना विश्वास दिखाऊँगा।" 19क्या अभी तक तुम यह समझते हो कि 'एक परमेश्वर'

2:11 निर्ग. 20:13-14 ध्यान दें कि प्रभु किस तरह व्यभिचार, हत्या आदि के साथ पक्षपात को जोड़ते हैं। इस तरह से वह पक्षपात को एक गंभीर बुराई मानते हैं।

2:12 "इन्साफ़"- 2 कुरि. 5:9-10.

"प्रेम"- 1:25 यदि हम सच में बुद्धिमान हैं तो हम आने वाले न्याय को ध्यान में रखकर जीएँगे।

2:13 मत्ती 5:7; 7:1-2; 18:23-35; लूका 6:37-38; नीति. 21:13; भजन 18:25-26.

2:14 "विश्वास के दावे की क्या कीमत"- ऐसा विश्वास जिसके साथ काम नहीं है, कोई कीमत नहीं रखता है। इफ़ि. 2:8-9; रोमि. 3:24-25,28; 4:5 लेकिन अनुग्रह और विश्वास के मार्ग से यीशु लोगों के जीवन को बदलते हैं। वह उन्हें नया बना देते हैं देखें 1:18; 2 कुरि. 5:17. ऐसे लोग परमेश्वर की कारीगरी हैं, जो मसीह में आने पर अब अच्छे काम करने के लिए हैं। (इफ़ि. 2:10)। अच्छे काम इस सच्चाई के सबूत का हिस्सा हैं कि हमारा विश्वास खरा है और हमारे मन में प्रभु ने काम किया है (इब्रा. 6:10; गल. 5:6)। यदि लगातार हमारे जीवन में अच्छे काम नहीं है तो यह सिद्ध करता है कि हमारा विश्वास सिर्फ़ शब्दों का है। यह भी कि हमारा बदलाव नहीं हुआ है। एक इन्सान की ज़िन्दगी में सच्चा विश्वास एक बड़ी शक्ति है। इब्रा. 10:39; और 11:4 देखें।

2:15-17 बिना अच्छे कर्म, विश्वास की डींग मारना आत्मिक जीवन की मौत (बर्बादी) को दिखाता है। यूहन्ना 3:17-18 से मिलान करें। इस तरह से जो व्यक्ति बर्ताव करता है, दिखाता है कि उसके अन्दर परमेश्वर का प्रेम नहीं है। यदि उसमें प्रेम नहीं है वह परमेश्वर को भी नहीं जानता है (1 यूहन्ना 4:8)। दूसरे शब्दों में जिस विश्वास का वह दावा करता है, वह वास्तविक विश्वास नहीं है खोटा या जाली है (2 कुरि. 9:15 के पद और नोट्स को देखें)। मेरा विश्वास क्या है? ऐसा विश्वास जो वही उत्पन्न करता है जो परमेश्वर की इच्छा है जैसे करूणा, प्रेम कोमलता आदि (गल. 5:22-23)। एक मरा विश्वास कट्टर हो सकता है, सही सिद्धान्तों को मानने वाला भी। वह कायल करने की कोशिश भी कर सकता है कि परमेश्वर और बाईबल पर भरोसा है।

2:18 याकूब की शिक्षा का यह कहकर कोई विरोध कर सकता है, कुछ के पास विश्वास और कुछ के पास कर्म है। याकूब का कहना है कि यदि कोई सही और अच्छे काम नहीं करता तो उसके पास असली विश्वास भी नहीं है। बिना कामों के विश्वास नहीं दिखाया जा सकता।

पर मात्र विश्वास काफ़ी है? कौन सी बड़ी बात है दुष्टात्मा भी ऐसा करते हैं और डर से काँपते हैं।

20बेवकूफ़! तुम यह कब सीखोगे कि वह विश्वास बेकार है, जिसके साथ अच्छे काम नहीं हैं। 21क्या तुम भूल गए हो कि हमारे पूर्वज अब्राहम ने जब अपने बेटे इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तभी परमेश्वर की दृष्टि में खरा ठहराया गया। 22देखो, उसका परमेश्वर पर इतना भरोसा था कि, जो कुछ परमेश्वर ने कहा, वह सब करने के लिए तैयार हो गया। उसके विश्वास को तभी पूरा माना गया जब उसने वह किया जो उसे करने के लिए कहा गया था। 23इसलिए, जैसा बाइबल में लिखा है, वैसा ही हुआ, अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने उसके धर्मी (खरे) होने का ऐलान किया। यहाँ तक कि उसे 'परमेश्वर का दोस्त' कहा गया 24इसलिए तुम देखो, कि हम मात्र अपने विश्वास के द्वारा नहीं, लेकिन जो कुछ करते हैं, उसकी वजह से परमेश्वर के साथ सही रिश्ते में लाए जाते हैं।

25यौन व्यापारी राहब इस सच्चाई का एक और सबूत है। परमेश्वर के साथ उसका रिश्ता उसके कर्मों के द्वारा सुधर गया -

---

2:19 "दुष्टात्मा भी ऐसा करते हैं"- मरकुस 5:2-7. वे विश्वास करते हैं कि, परमेश्वर का अस्तित्व है, लेकिन मुक्ति उनके लिए नहीं है। उनके पास विश्वास है लेकिन अच्छे काम गायब हैं। जीवित विश्वास उनके पास नहीं है, जो उन्हें बदलता है। यह दुख की बात है कि बहुत से अच्छे लोगों (मसीहियों) के पास वैसा ही विश्वास है, जैसा भूतों के पास है। वे एक परमेश्वर के मानने वाले हैं, लेकिन क्रूर, प्रेमरहित, स्वार्थी और सख्त दिल के हैं। यह भी कि उनके इस विश्वास से उन्हें क्या फ़ायदा है।

2:20 "बेवकूफ़"- यूनानी में इसका मतलब है 'खाली' या 'खोखला'। यह उस व्यक्ति की तरफ़ इशारा है जो परमेश्वरीय बुद्धि रहित है।

"बेकार"- एक मरा विश्वास कभी भी लाभदायक चीज़ पैदा नहीं करेगा। यदि ऐसा है, तो परमेश्वर इसे कैसे स्वीकार करेगा।

2:21-26 रोमि. 1:16-17; 3:22-28; 4:5; 10:9-10; इफ़ि. 2:8-9 । वह इसी सच्चाई का दूसरा पहलू दिखा रहा है। वह दिखाता है कि खरे विश्वास और अच्छे कामों को अलग नहीं किया जा सकता। याकूब वही सिखाता है जो पौलुस ने सिखाया। रोमि. 2:7-10; गल. 5:6; इफ़ि. 2:10; तीतुस 2:14. वह भी जो यीशु ने मत्ती 7:21; 24:27; 25:35-43 में सिखाया। जो विश्वास प्रेम में अपने आपको ज़ाहिर नहीं करता है, बेकार और मरा हुआ है। याकूब की भाषा यह दिखाती है कि क्योंकि अच्छे काम विश्वास से निकलते हैं वे विश्वास का एक हिस्सा कहे जा सकते हैं। याकूब पौलुस की शिक्षा के विरोध में नहीं सिखा रहा है। वह उनकी खिलाफ़त कर रहा है जो कहते हैं कि चाहे अच्छे काम हों या नहीं, विश्वास काफ़ी है।

2:21 उत्पत्ति 22:1-18.

2:22 यदि विश्वास और कर्म एक साथ काम नहीं करते, तो वे अलग भी कुछ नहीं कर सकते। कर्म ही विश्वास का सबूत है, विश्वास का पूरा होना है।

2:23 उत्पत्ति 15:6 देखिए और रोमि. 4:3 भी। याकूब और उसके पाठकों को मालूम था कि अब्राहम द्वारा इसहाक को बलि किए जाने की घटना से बहुत पहले यह हुआ। परमेश्वर ने अब्राहम को पहले ही से निर्दोष ठहरा दिया था। लेकिन जब वह इसहाक को चढ़ाने के लिए तैयार हुआ तभी उसका विश्वास जीवित साबित हो गया। हम यह कह सकते हैं कि इसहाक को चढ़ाए जाने की क्रिया अब्राहम में पहले से थी।

"परमेश्वर का दोस्त"- 2 इति. 20:7; यूहन्ना 15:15 से तुलना करें।

2:24 यहाँ जोर डालने के लिए वह ऐसा कह रहा है। उसका मतलब है कि परमेश्वर उसी प्रकार के विश्वास से किसी को निर्दोष ठहराते हैं, जिससे अच्छे काम उत्पन्न हों या ऐसा विश्वास, जिसमें अच्छे काम हों।

2:25 यहोशू 2:1-21; इब्रा. 11:31 यदि राहाब के पास विश्वास नहीं था, तो उसने इस तरह से न किया होता। उसके काम से उसका विश्वास प्रगट हुआ। उसके काम उसके विश्वास का सबूत थे।

जब उसने उन भेदियों को दूसरे रास्ते से
सुरक्षित वापस लौटा दिया। 26जिस तरह
से बिना आत्मा के देह मरी हुयी है, वैसे ही
बिना कामों के विश्वास भी मरा हुआ है।

3 प्रिय भाइयो और बहनो, चर्च में ज़्यादा
लोगों को शिक्षक नहीं बनना चाहिए,
क्योंकि हम सिखाने वालों के साथ परमेश्वर
ज़्यादा सख्ती के साथ पेश आएँगे। 2हम
सभी बहुत गलतियाँ करते हैं, लेकिन जो
इन्सान अपनी ज़ुबान को वश में कर सकता
है, खरा मनुष्य है, और हर दायरे में अपने
आपको वश में कर सकता है।

3एक छोटी सी लगाम को घोड़े के मुँह में
लगाकर हम जहाँ चाहें, उसे ले जा सकते
हैं। 4चाहे हवा कितनी तेज क्यों न हो, एक
छोटी सी पतवार से, एक माझी एक बड़े
जहाज को कहीं भी मोड़ सकता है। 5जीभ
हालांकि छोटा सा अंग है, लेकिन बहुत
बड़ी बर्बादी ला सकती है। एक छोटी सी
चिंगारी पूरे जंगल को जला सकती है।
6जीभ आग की एक लपट है। यह दुष्टता
से भरी है जो तुम्हारे पूरे जीवन की नाश
कर सकती है। यह तुम्हारे जीवन को पूरी
दिशा को बर्बादी की धधकती लपटों में
बदल सकती है, क्योंकि वह खुद नरक

2:26 ऐसा विश्वास जो अच्छे काम पैदा न करे, एक लाश की तरह है। यह बेजान और निष्क्रिय होता है और जल्दी सड़ जाता है। क्या हमारा विश्वास क्रियाशील है, परमेश्वर के लिए किसी तरह की उपज दे रहा है? यदि नहीं तो जैसे दुष्टात्माएँ (भूत) काँपते हैं, हम भी भय खाएँ (पद 19) पुराना चालचलन छोड़कर पूरे मन से प्रभु की तरफ़ मुड़ें।

3:1-12 "शिक्षक"- इसका मतलब है बाईबल शिक्षक। ऐसे व्यक्ति के पास एक गंभीर ज़िम्मेदारी है। पहली बात यह कि जो कुछ वह दूसरों को सिखाता है पहले खुद करता है या नहीं। इसलिए कि उसके पास ज्ञान ज्यादा है उसकी शिक्षा का हिसाब भी परमेश्वर सख्ती से लेंगे। देखें लूका 12:47-48. इसलिए बाईबल सिखाना हल्की फुल्की बात नहीं है। हर एक शिक्षक को जानना चाहिए कि उसकी बुलाहट शिक्षक की है और शिक्षा देने का वरदान है। (रोमि. 12:6-7) जिसे परमेश्वर तैयार करते हैं, शिक्षा देने के लिए, उसे बहुत संतोषजनक अद्‌भुत काम दिया गया है। वह दूसरों की बड़ी भलाई कर सकता है। अपने इस काम में इन्हें खतरनाक अंग (जीभ) का इस्तेमाल करना है।

3:2 "गलतियाँ करते हैं"- देखें 2:10 जहाँ वही यूनानी शब्द इस्तेमाल किया गया है, साथ ही रोमि. 11:11 देखें। यूनानी शब्द है ठोकर खाना, लेकिन जब सांकेतिक अर्थ में इस्तेमाल होता है तब इसका मतलब है भटक जाना, गलती करना, बुरा करना। ध्यान दें याकूब कहता है कि हम सभी ऐसा अलग तरीकों से करते हैं। इसलिए मत्ती 6:12; 1 यूहन्ना 1:9 का होना कितना अच्छा है।

"ज़ुबान को"- याकूब कहता है कि इन्सान के पास जो कुछ है उसमें से सब से मुश्किल में वश में आने वाली चीज़ जीभ है। जिसने अपनी जुबान को काबू में कर लिया है, वही परिपक्व है और परमेश्वर के काम के लिए योग्य है।

3:3-5 यह मुद्दे की बात यह है कि छोटी बातें बड़ा असर डाल सकती है। किसी और चीज़ से ज़्यादा जुबान में ताकत है? यह बना सकती है, बर्बाद कर सकती है। यह जीवन का पेड़ हो सकती है (नीति. 15:4; 18:21) साँप के डंक के भजन 140:3, या खून करने वाली तलवार की तरह भजन 57:4. यह स्वस्थ करने वाली दवाई (नीति. 12:18) है। यह समस्या और बुराई भजन 10:7 और इन्साफ़ (भजन 37:30; 51:14) उत्पन्न कर सकती है।

3:6 जीभ जो स्वाभाविक रीति से अनियन्त्रित है उसके बारे में याकूब कह रहा है। जीभ से उसका मतलब बोलने की योग्यता या जो मन और दिमाग में है, उसको कहना।

"लपट"- जीभ बड़ी बर्बादी वाली हो सकती है (भजन 52:2)। इसकी एक चिंगारी से बड़ी आग लगने के कारण बहुत कुछ बर्बाद हो सकता है। जीभ अपने आप में पूरी दुनिया है। स्वभाव से यह संसार बुरा है - भजन 58:3. अभिलाषा और बुराई की वजह से आग लगी हुयी है। यह आग नरक से आयी हुयी है। शैतान ने लोगों को सिखाया है कि झूठ बोलें, धोखा दें, बुरा कहें। से सभी बातें ऐसी आग है जो नाश करती है।

से सुलगायी जाती है।

7सब तरह के जानवरों, चिड़ियों, रेंगने वाले जीव और मछलियों को वश में किया जा सकता है। 8लेकिन जीभ को वश में कोई नहीं कर सकता। यह अनियन्त्रित बुराई है, जिसमें खतरनाक ज़हर भरा हुआ है। 9कभी-कभी यह हमारे प्रभु और पिता की बड़ाई करती है और कभी परमेश्वर की समानता में बनाए गए लोगों के खिलाफ़ ज़हर उगलती है। 10इसलिए आशीष और शाप एक ही मुँह से उमड़कर बाहर आते हैं। मेरे भाइयो-बहनो, यह बिलकुल सही नहीं है। 11क्या पानी के एक झरने में से मीठा और खारा, दोनों तरह का पानी निकलता है? 12क्या अंजीर के पेड़ में जैतून और अंगूर की बेल मे अंजीर निकलते हैं? नहीं, न ही मीठा पानी नमकीन झरने से निकलता है।

13यदि तुम बुद्धिमान हो और परमेश्वर के तौर तरीकों को समझते हो, तो भलाई के जीवन को बना रहने दो, ताकि सिर्फ़ अच्छे काम किए जाएँ। और बिना डींग मारे इन कामों को करने में सच्ची बुद्धिमानी है। 14लेकिन यदि तुम्हारे मन में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थमय कामना है तो घमण्डी होकर सच्चाई का मखौल मत करवाना। 15ऐसी बुद्धि का स्रोत परमेश्वर नहीं हैं यह दुनियावी है, शारीरिक और शैतानी है। 16इसलिए कि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थी आकांक्षा है वहीं सब तरह की गड़बड़ी और बुराई है।

3:7-8 यीशु को छोड़कर क्या दुनिया में कोई इन्सान हुआ है, जिसने अपनी जीभ को पूरी तरह नियंत्रण में किया है? अब्राहम न कर सका - उत्पत्ति 12:11-20; 20:2-9; 17:17-18. मूसा ने नहीं किया गिनती 20:10-12; भजन 106:33. पतरस न कर सका। मत्ती 26:69-74. पौलुस और याकूब भी न कर सके। प्रे.काम 23:2-5; याकूब 3:7. इसका मतलब यह नहीं हूँ कि हमें अपनी जीभ को काबू में नहीं करना चाहिए। देखें भजन 141:3; नीति. 10:19; 11:12; 21:23. ज़रूरी यह है कि हमारा मन और दिमाग सही चीजों से भरा हो, तब हमारी ज़ुबान भी सही बातें कहेगी। मत्ती 12:34-37; कुल. 3:16. हम अकेले अपनी जीभ को वश में नहीं कर सकते। प्रभु की बातें और वह स्वयं ऐसा कर सकते हैं।

"वश में"- भजन 39:1-3.

3:8 "ज़हर"- भजन 58:4; रोमि. 3:13.

3:9-10 ऐसा होना नहीं चाहिए, लेकिन ऐसा है। कुछ लोग घर के बाहर सन्त हैं, लेकिन घर में शैतान।

"परमेश्वर की समानता"- उत्पत्ति 1:26-27; इफ़ि. 4:24.

3:11-12 सारी ज़मीन पर ऐसा लगता है कि सिर्फ़ इन्सान की जीभ में दो तरह की बातें हैं।

3:13-18 इस दुनिया में दो तरह का ज्ञान है। एक का स्त्रोत शैतान है (पद 15) दूसरे का ईश्वर (पद 17)। एक व्यक्ति के जीवन को देखकर हम कह सकते हैं कि वह बुद्धिमान है या नहीं। जिसके पास स्वर्गिक बुद्धि और ज्ञान है, वह घमण्डी, ईर्ष्यालु, स्वार्थी या दुनियावी नहीं होगा। ऐसे लोगों की लोग बड़ाई कर सकते हैं। वे सोच भी सकते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। वे बुद्धिमान चालाक और तेज हो सकते हैं। प्रभु यह देखते हैं कि उनकी बुद्धि कहाँ से आती है। 1 कुरि. 1:17; 2:16 में भी दो तरह की बुद्धि के बारे में देखें 3:13 सिर्फ़ अच्छे लोग बुद्धिमान हैं। एक बुरा व्यक्ति चाहे कितना दिमाग क्यों न रखता हो, बेवकूफ़ है। सच्चे ज्ञान का सबूत नम्रता है। जिनके पास ईश्वरीय ज्ञान और बुद्धि है वे घमण्ड नहीं करेंगे। (भजन 14:1; 111:10; नीति. 3:7; 8:1-8)।

"बिना डींग मारे"- क्या एक व्यक्ति जो कड़वाहट, ईर्ष्या और झगड़े से भरा है घमण्ड कर सकता है? सच में कर सकता है।

3:14 "ईर्ष्या"- अय्यूब 5:2; नीति. 14:30; 23:17; मत्ती 27:18; मरकुस 7:22; रोमि. 1:29; 1 कुरि. 13:4; गल. 5:26.

3:15 क्या कुछ धार्मिक लोगों (मसीही भी) के पास शैतानी ज्ञान है? उनके काम, लक्ष्य आदि हमें ऐसा सोचने पर मजबूर कर सकते हैं। दीनता की कमी, ईर्ष्या, झगड़ा, घमण्ड, सच्चाई को नकारना - ये सब ईश्वरीय ज्ञान को नहीं दिखाते हैं।

3:16 शैतानी ज्ञान जो इन्सान के दिमाग में होता है, उसका परिणाम देखें।

17लेकिन जो बुद्धि परमेश्वरीय है वह
पवित्र मिलनसार, कोमल, दूसरों की
आधीनता स्वीकार करने वाली है। यह
दया और अच्छे काम से भरी है। 18इस
में कभी पक्षपात नहीं है, ईमानदारी है। जो
लोग मेल करवाते हैं, वे शान्ति बोते हैं और
भलाई की फ़सल काटते हैं।

4 तुम्हारे बीच लड़ाइयों और झगड़ों का
कारण क्या है? क्या तुम्हारे भीतर बुरी
इच्छाओं के संघर्ष के कारण से नहीं?
2तुम लालसा करते हो, और तुम्हें मिलता
नहीं। तुम हत्या और लालच करते हो और
जो चाहते हो वह हासिल नहीं कर पाते।
क्योंकि तुम्हें मिलता नहीं इसलिए दूसरों
से छीना झपटी करते हो। तुम्हारे पास है
नहीं, क्योंकि तुम परमेश्वर से माँगते नहीं
हो। 3माँगने पर पाते इसलिए नहीं हो,
क्योंकि गलत इरादे से माँगते हो, ताकि
सिर्फ़ अपनी इच्छाओं को पूरा करो।

4हे व्यभिचारी लोगो क्या तुम्हें यह नहीं
मालूम कि इस दुनिया की दोस्ती तुम्हें

3:17 "परमेश्वरीय"- नीति. 8:22-23; 1 कुरि. 1:24,30; 2:7,13; कुल. 2:3.

"पवित्र"- जो ज्ञान प्रभु देते हैं, वह हर तरह के पाप, अशुद्धता और भ्रष्टता से परे होती है। यह पवित्र होगी और दुनिया के ज्ञान से परे है। यह ज्ञान परमेश्वर और इन्सान के बीच, इन्सान-इन्सान के बीच मेल को प्रोत्साहित करता है। यह कोमल होता है और दूसरों की भलाई की सोचता है, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होता है। यह मत्ती 5:7,9 की सच्चाई को स्वीकारता है और इसका अभ्यास भी करता है। यह परमेश्वर के लिए अच्छा फल पैदा करता है। दूसरों के प्रति व्यवहार में यह हमें बेपक्षपात बनाता है (2:1), ईमानदार (प्रे.काम 2:46; 2 कुरि. 1:12; 6:6; 1 तीमु. 1:5; 2 तीमु. 1:5; इब्रा. 10:22; 1 पतर. 1:22) इस में कोई ढोंग नहीं है। अगर हमारे पास ऐसा ज्ञान नहीं है, तो हम प्रभु से माँगें और मानें कि हमें मिलेगा - 1:5-6.

3:18 जब परमेश्वर-मनुष्य और मनुष्य-मनुष्य के बीच मेल रहता है तो यह अच्छी बात है। मेल और सही तरह का जीवन, दोनों ही प्रभु की तरफ़ से बहते हैं। भजन 85:10; नीति. 3:17; यशा. 32:17 इसलिए हमें परमेश्वरीय बुद्धि और ज्ञान के लिए भूखे होना चाहिए।

4:1-2 शैतानी ज्ञान के यहाँ कुछ परिणाम हैं (3:15) यह मनुष्य के भीतर चलने वाले युद्ध की तस्वीर है। यह भीतर युद्ध दूसरों के साथ हमारे झगड़े करा देता है। तुलना करें 1 कुरि. 3:3; गल. 5:17 "हत्या और लालच" याकूब उन यहूदियों को लिखता है जो यीशु को मानने का दावा करते हैं। लेकिन उनका चालचलन दिखाता था कि वे शैतान के लोग हैं (यूहन्ना 8:44)। इस दुनिया मे भ्रष्टाचार की जड़ गंदी चाह (अभिलाषा) है (1:15)।

4:2 "लालसा करते हो"- अपने काम के साथ ही प्रार्थना करने के बजाए कुछ लोग कुछ हासिल करने के लिए झगड़ा-फ़साद और खून कर डालते हैं।

4:3 ध्यान दें, प्रभु हमारी बिनती का जवाब क्यों नहीं देते हैं और गलत नीयत का क्या मतलब है। प्रभु हमारे कुछ भी माँगने पर नहीं देते हैं क्योंकि ऐसा होने पर हम ज़्यादा स्वार्थी और हर तरह से बुरे हो जाएँगे। मज़ा करने के लिए लोग ज्यादातर चीजों को माँगते हैं। यदि प्रभु नहीं देते हैं तो हमें उन पर दोष नहीं लगाना चाहिए। प्रभु कुछ ऐसे माता-पिता की तरह नहीं है जो बच्चों के कुछ भी माँगने पर उन्हें दे देते हैं। हम अपने मन को खोलें और ईमानदारी से वह प्रार्थना करें, जो वह चाहते हैं। वह चाहते हैं कि हम माँगे (भजन 139:23-24; 66:18; मत्ती 6:9-13)।

4:4 "हे व्यभिचारी लोगो"- चर्च में कुछ ऐसे लोग शायद होंगे जो अनैतिक जीवन बिता रहे थे। लेकिन याकूब शायद आत्मिक दायरे के व्यभिचार की बात करता है, क्योंकि वह तुरन्त दुनिया से दोस्ती के बारे में कहता है।आत्मिक व्यभिचार के बारे में देखें यिर्म. 2:2; 3:6-9; यहेज. 16:31-34; होशे 1:2. इसका मतलब है कि परमेश्वर के कहलवाने वाले लोग किसी और चीज़ के लिए परमेश्वर को छोड़ दें।

दुनिया से दोस्ती परमेश्वर के लिए नफ़रत क्यों हैं? यहाँ दुनिया का मतलब लोगों की इस दुनिया से है जो पाप से सनी हुयी है। इसके बारे में साफ़-साफ़ यूहन्ना 3:19; 7:7; 15:18-21; गल. 1:3; 1 यूहन्ना 2:15-17; 5:19 में लिखा है। यह दुनिया परमेश्वर के खिलाफ़ में बलवा करने वाली है। यह बुराई से प्रेम करती है, परमेश्वर

परमेश्वर का दुश्मन बनाती है? मैं फिर कहता हूँ कि यदि तुम्हारा मकसद इस दुनिया का मज़ा लूटना है, तुम परमेश्वर के दोस्त नहीं हो सकते। 5क्या तुम बाइबल में लिखी इस बात को बेकार समझते हो, परमेश्वर जिसने हमारे भीतर पवित्र आत्मा को रखा है, इस बात के लिए लालायित रहता है, कि हम विश्वासयोग्य बने रहें? 6बुरी इच्छाओं का डटकर मुकाबला करने के लिए वह ज़्यादा से ज़्यादा अनुग्रह देते हैं। जैसा कि बाइबल कहती है, परमेश्वर घमण्डी इन्सान का मुकाबला करते हैं, लेकिन नम्र पर कृपा करते हैं।

7इसलिए परमेश्वर के प्रति आधीन बन जाओ। शैतान का मुकाबला करो और वह तुम्हारे पास से भाग खड़ा होगा। 8परमेश्वर की नज़दीकी हासिल करो, तुम्हें भी उनकी नज़दीकी का अनुभव हो जाएगा। गुनाहगारों अपने हाथों को शुद्ध करो, दो मन वालो अपने मन को पवित्र करो। 9दुखी होओ, विलाप करो और रोओ। तुम्हारी हँसी रोने मे बदल जाए और खुशी निराशा में।

से नफ़रत। इसलिए इस दुनिया से दोस्ती का मतलब है सच्चे प्रभु के दुश्मनों के साथ मिल जाना और प्रभु का दुश्मन हो जाना है। हम इन बातों को ध्यान से समझें। क्या हम इस दुनिया के मित्र बनना चाहेंगे जिसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया? क्या हम इसके लक्ष्य, आकांक्षा, आमोद प्रमोद के तरीकों और रास्तों को अपनाएँगे? हम सावधान रहें। रोमि. 12:2 से मिलाएँ।

4:5 यह यूनानी शब्द मुश्किल है। इसे तमाम तरह से अनुवाद किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ऊपरी अनुवाद के अलावा इसका मतलब हो सकता है - जिस आत्मा को परमेश्वर ने हमारे अन्दर रहने के लिए रखा है, उसके प्रति वह बहुत गंभीर है। एक तरह से याकूब कहना यह चाहता है इन्सान का स्वभाव कैसा क्यों न हो, वह हमारी मदद कर सकते हैं कि हम दुनियादारी को त्यागें और उनकी समीपता पाएँ (6-8) यही प्रभु हम से चाहते हैं। प्रभु हमारी आत्माओं के लिए पवित्र जलन रखने वाले हैं और अपने लिए हमें चाहते हैं। देखें निर्ग. 20:5; 34:14; व्यव. 4:24; 5:9; 6:15; यहोशू 24:19.

4:6 नीति. 3:34; 1 पतर. 5:5.

"घमण्डी"- नीति. 6:16-17; 16:5; 21:4; यशा. 2:12-18; 13:11 अगर हम घमण्ड को अपने ऊपर राज्य करने देंगे तो परमेश्वर हमारे दुश्मन बन जाएँगे और हमारे खिलाफ़ लड़ेंगे।

"नम्र"- 3:13; भजन 138:6; नीति. 16:19; यशा. 57:15; 66:2; मत्ती 5:3; 18:3-4.

"नम्र पर कृपा"- यूहन्ना 1:14,16,17; रोमि. 5:2,20,21. दुनिया का इन्कार करने और परमेश्वर के प्रति समर्पण इन सब के लिए परमेश्वरीय सहायता की जरूरत है।

4:7 "आधीन"- नम्र लोग ही ऐसा करेंगे, घमण्डी नहीं।

"भाग खड़ा होगा"- यहाँ एक बड़ी प्रतिज्ञा है। जो लोग परमेश्वरीय ताकत में शैतान का मुकाबला करते हैं, उन से शैतान डरता है। लेकिन वह उन्हीं लोगों को देख भाग खड़ा होता है, जो अपने को परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हैं। पहले समर्पण है, फिर शैतान से मुकाबला आता है। मत्ती 4:1 में शैतान पर अध्ययन करें। शैतान का अपनी ताकत में या घमण्ड में मुकाबला सिर्फ़ असफ़लता लाएगा।

4:8 यदि हम सही तरीके से प्रभु के पास आएँ, तो हमेशा निर्भर हो सकने वाला वायदा नहीं है। तुलना करें जकर्याह 1:3.

"शुद्ध"- यशा. 1:16-17 से तुलना।

"दो मन वालो"- 1:8 यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे पास रहें, हमें हर जानी हुई बुराई को छोड़ना होगा और पूरा भरोसा रखना होगा।

"मन को पवित्र"- यहेज. 18:31 से मिलान करें। याकूब पूरे बदलाव की बात कह रहा है (मत्ती 3:2,8 के नोट्स) और इन तरीकों की जो प्रभु ने शुद्धता के लिए दिया है। 1 पतर. 1:22; 1 यूहन्ना 1:7,9.

4:9 मत्ती 5:4; लूका 6:21; 2 कुरि. 7:8-10 । याकूब बुराई के लिए दुखी होने की तरफ़ इशारा करता है प्रभु उन लोगों के पास आकर उनकी भलाई नहीं करते हैं जो बुराई को हल्की फ़ुल्की बात समझते हैं। हमारा दुख और विलाप कब तक रहना चाहिए? जब तक हम यह न जान लें कि प्रभु ने हमें माफ़ किया है और उत्साहित किया है। हमें पश्चाताप का पूरा काम करना चाहिए (यिर्म. 29:13)।

10परमेश्वर की निगाह में अपने आपको
नम्र करो, तो वह तुम्हें आदर देंगे।

11एक दूसरे की बुराई मत करो। जो अपने
भाई-बहन के खिलाफ़ में बोलता है और दोष
लगाता है वह परमेश्वरीय नियम (व्यवस्था)
की बदनामी करता है। यदि तुम परमेश्वरीय
नियम पर दोष लगाते हो, तो नियम पर चलने
वाले नहीं, लेकिन उसको दोषी ठहराने
वाले हो गए, 12नियम (व्यवस्था) देने वाले
एक ही हैं, जिन्हें बचाने और बर्बाद करने
का अधिकार है। तुम किसी को अपराधी
ठहराने वाले कौन हो?

13तुम जो कहते हो कि इन्हीं दिनों में
और आने वाले दिनों में हम किसी दूसरे
शहर जाकर एक साल व्यापार कर के
कुछ कमाएँगे। 14सच्चाई तो यह है कि तुम्हें
नहीं मालूम कि कल क्या होगा, तुम्हारा
जीवन है ही क्या? यह भाप की तरह है
कुछ पल दिखती है, फिर गायब हो जाती
है। 15इसके बजाए तुम्हें यह कहना चाहिए
कि अगर यीशु चाहें तो हम ज़िन्दा रहेंगे
और यह या वह काम करेंगे। 16लेकिन
तुम तो अपनी योजनाओं के सिलसिले में
घमण्ड करते हो। हर तरह का घमण्ड बुरा
है। 17इसलिए जो भलाई करना जानता है,
लेकिन करता नहीं, यह गुनाह है।

5 हे अमीर लोगो सुनो, तुम्हारे भविष्य
में तुम्हारे ऊपर जो भयंकर परेशानियाँ
आने वाली हैं, उनकी वजह से रोओ और

4:10 पद 6; लूका 1:52; 1 शमू. 2:7-8; भजन 15:1,3; 50:20; नीति. 10:18; मत्ती 15:19; 23:12; इफ़ि. 4:31; कुल. 3:8.

4:11 "खिलाफ़ में बोलता"- किसी की बुराई, शैतान ही का काम है यही उसके नाम का अर्थ भी है। इसलिए विश्वासी शैतान के व्यवसाय में उसके मददगार क्यों हों? जो किसी के खिलाफ़ बात करता है वह उसे दोषी ठहराता है। परमेश्वरीय नियम हमें प्रेरित करता है कि हम दूसरों से उतना प्रेम करें, जितना खुद से करते हैं। दूसरों के खिलाफ़ बोलना प्रेम करना नहीं है। यदि कोई ऐसा करता है तो अपने आपको परमेश्वरीय नियम के ऊपर ठहराता है। वह ऐसा करने पर नियमशास्त्र या व्यवस्था के शब्दों को महत्वहीन ठहराकर उसका जज ठहरता है।

4:12 यशा. 33:22; निर्ग. 20:1.

"बचाने और बर्बाद करने का अधिकार"- मत्ती 10:28; यशा. 43:11.

"अपराधी ठहराने वाले कौन हो?"- मत्ती 7:1-2; रोमि. 14:4,10-13.

4:13 यहाँ एक और सामान्य बुराई है जो मसीहियों मे भी पायी जाती है। कुछ लोग बिना परमेश्वर की परवाह किए योजना बनाते हैं। यह भी कि वे बिना प्रभु की मदद अपने जीवन को बना सकते हैं।

4:14 तुलना करें 1:10-11; अय्यूब 7:7; भजन 39:5; 102:3; 144:4; नीति. 27:1; 1 पतर. 1:24; लूका 12:16-20. हमें नहीं मालूम कि कल कौन सी प्राकृतिक मुसीबत आ जाएगी या दुर्घटना हो जाएगी और कल का दिन हमारा आखिरी दिन है।

4:15 "कहना"- वह ऐसी सलाह नहीं दे रहा है कि रटे-रटाए शब्द कहे जाएँ। हमें अर्थ पूर्ण कहने के साथ परमेश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पण करना चाहिए। जो वह कहें, वह करना चाहिए (पद 7; मत्ती 6:10; यूहन्ना 4:34; प्रे.काम 21:14; रोमि. 1:10; 12:1-2)।

4:16 "घमण्ड करते हो"- भजन 52:1; 75:4; यिर्म. 9:23; आमोस 4:5; 1 कुरि. 4:7; गल. 6:13 मनुष्य प्रायः घमण्ड करता है अपने किए हुए पर या वह सोचता है कि क्या करेगा और कर सकता है। प्रभु बताते हैं कि यह सब घमण्ड किस तरह का है।

4:17 लूका 12:47; यूहन्ना 9:41; 2 पतर. 2:21 लोग इस तरह से बहाना कर सकते थे कि उन्हें जानकारी या ज्ञान नहीं था। लेकिन यह उन्हें मालूम हो चुका है कि सही क्या है, इसलिए बहाना बनाने से काम नहीं चलेगा। यह ध्यान दें कि सही काम जिसे किया जाना चाहिए, यदि हम नहीं करते हैं, अपराध है, जिस तरह बुरा करना अपराध है। तुलना करें गिनती 32:23; 1 शमू. 12:23; मत्ती 25:41-46.

5:1-6 "हे अमीर लोगो"- यहाँ याकूब उन धनी और स्वार्थी लोगों से कहता है जो गरीबों को चूसते हैं। उन्हें यह फ़िक्र नहीं कि धन बटोरने के बारे में प्रभु क्या कहते हैं (भजन 37:16; 52:6-7; 62:10; नीति. 11:28; मत्ती 6:19-21; लूका 12:16-21; 14:33; 1 तीमु. 6:6-10,17-19)।

5:1 "भयंकर परेशानियाँ"- लूका 6:24-25; 16:19-31.

विलाप करो। 2तुम्हारी दौलत बर्बाद हो गयी और तुम्हारे कपड़े कीड़े खा गए। 3तुम्हारा सोना-चाँदी खराब हो चुका है। उसका खराब होना ही तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देगा, । उस पर लगा हुआ जंग तुम्हारी देह को आग की तरह खा डालेगा। दुनिया के आखिरी समय में तुम ने दौलत इकट्ठा की है। 4देखो, जिन मज़दूरों ने तुम्हारी फ़सल काटी, उनकी मज़दूरी तुम ने हथिया ली। उनकी मज़दूरी तुम्हारे खिलाफ़ चिल्ला रही है। फ़सल काटने वालों की पुकार सर्वशक्तिमान प्रभु के कान तक पहुँच चुकी है। 5इस पृथ्वी पर तुम ने अपनी हर एक इच्छा को पूरा करने और विलासिता में अपना जीवन गवाँ दिया। तुम ने अपने मन को वध के दिन के लिए मोटा ताज़ा कर लिया है। 6जो लोग अपना बचाव खुद नहीं कर सकते थे, उन लोगों को तुम ने दोषी ठहराया और मार भी डाला।

7प्रिय भाइयो-बहनो, यीशु के आने तक धीरज रखो। देखो किसान ज़मीन की कीमती उपज के लिए तब तक धीरज के साथ इन्तज़ार करता है जब तक वह शुरू की और आखिरी बारिश नहीं देख लेता है। 8इसलिए कि यीशु का आना नज़दीक है, तुम भी धीरज रखने के साथ अपने मन में मजबूत रहो। 9एक दूसरे के खिलाफ़ मत कुड़कुड़ाओ, नहीं तो परमेश्वर भी तुम्हें

5:3 "खराब"- यहाँ याकूब पुराने समय (भूतकाल) की बात कर रहा है। इसलिए नहीं कि यह संपत्ति नष्ट हो चुकी है, लेकिन यह दिखाने के लिए कि ऐसा होगा ही। वह दुनिया के अन्त में धन-दौलत के बेकार होने को दिखाता है,वह चाहे कुछ भी क्यों न हो। लोग उन चीज़ों को यहीं छोड़ कर खाली हाथ यहाँ से जाएँगे। याकूब को मालूम था कि सोने में काई नहीं लगती है। वह एक सच्चाई बता रहा है कि जो कुछ धनी लोग बटोरते हैं, चाहते हैं, उसमें से कुछ भी बचा न रहेगा।

"दौलत इकट्ठा"- जब कि दुनिया में कितने लोग गरीब हैं, असहाय हैं भूखे मर रहे हैं, जमाखोरी अपराध है। जो पीड़ा परमेश्वर इन धनी लोगों पर भेजेंगे वह उनकी मज़दूरी होगी।

5:4 "मज़दूरों"- बाईबल गरीब, परिश्रमी और पिसे हुए लोगों के पक्ष में है।

"प्रभु के कान"- एक ईमानदार जज है, धनी द्वारा शोषित लोगों की दोहाई उनके कान तक जाती है।

5:5 "विलासिता"- लूका 16:19,25 अफ़सोस उन पर जो अपनी हर चाह पूरा करते हैं। तुलना करें लूका 9:23 से। स्वार्थ हमेशा बर्बादी की तरफ़ ले जाता है।

"वध"- उनकी विलासिता और स्वार्थ का अन्त मौत में है। याकूब उनकी तुलना गूँगे पशुओं से करता है, जिन्हें काटे जाने के लिए मोटा किया जाता है। (आमोस 4:1 से मिलान करे)। हमारे प्रान्त के छोटे जीवन में हम सचमुच में जो महत्वपूर्ण बातों पर मन लगाएँ। वे हैं पाप क्षमा, बुद्धि, निर्दोषता, सत्य, पवित्रता आदि (मत्ती 6:33)।

5:6 यह एक अजीब और भयानक सच्चाई है कि लोग जो आज यहाँ हैं, कल नहीं रहेंगे वे पैसा या जायदाद हासिल करने के लिए किसी भी परमेश्वर के नियम को अपने पैरों से कुचल सकते हैं। सच पूछें तो उनके मन में पागलपन है (सभो. 9:3)।

5:7 "भाइयो-बहनो"- याकूब अमीर लोगों के बारे में बातें कहना रोक कर फिर से यीशु के विश्वासियों से बात करता है। हालांकि वे शोषण और परेशानियों का सामना कर रहे हैं, उन्हें धीरज रखना चाहिए। (रोमि. 12:12; गल. 5:22; कुल. 1:11; इब्रा. 6:12)

"यीशु के आने"- मत्ती 16:27; यूहन्ना 14:3; प्रे. काम 1:11 किसान धीरज से फ़सल का इन्तज़ार करता है। विश्वासियों को चाहिए कि आत्मिक जीवन में परमेश्वरीय योजना पूरा होने के लिए इन्तज़ार करें।

5:8 "मजबूत"- मत्ती 24:13; 1 कुरि. 15:58; 16:13; 2 कुरि. 1:21,24; इफ़ि. 6:14; कुल. 1:23; 4:12; 1 पतर. 5:9-10 'आना अचानक' बाईबल का कोई भी लेखक यीशु के आने का सही समय नहीं बताता है ऐसा लगता है कि उन में से कुछ अपने ही काल में यीशु के आगमन का इन्तज़ार कर रहे थे। लेकिन देखें यूहन्ना 21:18-23; 2 तीमु. 4:6; प्रका. 1:1-3 पर नोट्स देखें।

5:9 कुड़कुड़ाना दूसरों पर आरोप लगाने की तरह है और हमारा यह काम नहीं है।

सज़ा देंगे। देखो, जज दरवाजे पर ही खड़े हैं।

10मेरे भाइयो-बहनो, धीरज से दुख उठाने के सम्बन्ध में उन नबियों को याद करो, जिन्होंने प्रभु की तरफ़ से चेतावनी दी थी। 11उन लोगों को हम काफ़ी आदर देते हैं, जो धीरज से सहते रहते हैं। धीरज से सहने वालों में अय्यूब एक नमूना है। उसके अनुभव से हम सीखते हैं, कि परमेश्वर की योजना का अन्त किस तरह से भलाई में होता है, इसलिए कि प्रभु कोमल हैं और कृपालु भी।

12मेरे भाइयो-बहनो, सब से ज़्यादा यह कि न तो स्वर्ग (आसमान), न धरती और न किसी और की कसम खाओ। साफ़-साफ़ 'हाँ' कहो या 'नहीं', ताकि तुम से गुनाह न हो और सज़ा से बच सको।

13क्या तुम में से कोई दुखों में से होकर गुज़र रहा है? वह परमेश्वर से कहे। क्या कोई खुश है? वह भजन गाए। 14क्या तुम में से कोई बीमार है वह चर्च के बुजुर्ग अगुवों को बुलाए? वे तेल मल कर यीशु के नाम से उसके लिए प्रार्थना करें। 15विश्वास में की गयी उनकी प्रार्थना से बीमार ठीक हो जाएगा। यीशु उसे उठा खड़ा करेंगे और

"सज़ा देंगे"- मत्ती 7:1-2.

"जज"- यीशु मसीह (4:12 से तुलना करें) वह अचानक ही आ सकते हैं।

5:10 याकूब ने सभी को धीरज रखने को कहा है (पद 7)। अब वह बाईबल में धीरज के बड़े उदाहरणों की तरफ़ इशारा करता है। इब्रा. 11:35-39 कुछ उन बातों को दिखाता है जो उन लोगों ने सही थी।

नबियों - उत्पत्ति 20:7 के नोट्स देखें। प्रभु की तरफ़ से - निर्ग. 5:1; 1 राजा 17:1; 2 राजा 7:1; यशा. 1:10; यिर्म. 1:9-10; 7:2; यहेज. 3:4; 13:2; होशे 4:1; आमोस 1:3.

5:11 "सहने"- 1:2-4 उनके दुखों ने उनके धीरज को नाश नहीं किया लेकिन बढ़ाया (रोमि. 5:3)।

अय्यूब - अय्यूब 1:13; 2:10.

अन्त में - अय्यूब 42:10-17.

कोमल और कृपालु - निर्ग. 34:6-7; भजन 5:7; 25:6; 103:13; 116:5 प्रभु हम पर उतना नहीं आने देंगे, जो हम सह नहीं सकते।

5:12 मत्ती 5:33-37 हमें हर शब्द यह जानकर बोलना चाहिए कि प्रभु सुन रहे हैं।

5:13-14 जिन तीन परिस्थितियों की बात वह करता है, वे विश्वासी के जीवन के ज़्यादा पहलुओं के बारे में है।

"दुखों"- तकलीफ़ों में से होकर जाना (2 तीमु. 2:3; 4:5)। यह विश्वासियों के लिए है (प्रे.काम 14:22)।

"परमेश्वर से कहे"- हमारी प्रार्थनाओं के जवाब में प्रभु या तो छुड़ा लेते हैं या धीरज से सहने के लिए ताकत देते हैं। लेकिन यह न समझें कि सिर्फ़ परेशानी ही में हमें प्रार्थना करना है (तुलना करें इफ़ि. 6:18; 1 थिस्स. 5:17)।

"खुश"- ऐसे समय है जब विश्वासी समस्याओं से आज़ादी पाते हैं, कोई बोझ महसूस नहीं करते हैं और खुश रहते हैं - स्तुति करने का एक अच्छा समय - भजन 9:13-14; 18:49; 35:28; 47:6; 51:14-15 सभी समय धन्यवाद दिया जा सकता है लेकिन कभी भी हम ज़्यादा नहीं कर सकते हैं।

5:14 सभी लोग बीमार होते हैं। याकूब बताता है कि ऐसे समय में क्या करना चाहिए। बहुत कम लोग इस प्रबंध का फ़ायदा उठाते हैं ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को इसका फ़ायदा उठाना चाहिए।

"यीशु के नाम से"- यह समझना जरूरी है कि किसी व्यक्ति या वस्तु स्वास्थ्य नहीं है। यीशु ठीक करते हैं निर्ग. 15:26.

5:15 लोगों के तुरन्त बीमार पड़ते ही प्रभु उन्हें अच्छा कर दें, ऐसा ज्यादातर नहीं होता है (फ़िलि. 2:26-27; 1 तीमु. 5:23; 2 तीमु. 4:20)। जब चर्च में अगुवों को बुलाया जाता है और बीमार ठीक हो जाता है, तो किसी एक या ज़्यादा अगुवों को प्रभु विश्वास देते हैं कि ताकि बीमार स्वस्थ हो जाए।

"अगर...हों"- ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ स्थितियों में बीमार आदमी के गुनाह की वजह से बीमारी आती है। 1 कुरि. 11:30 से तुलना करें। - यहाँ कुछ गुनाहों के लिए 'कमज़ोरी या बीमारी' परमेश्वर की तरफ़ से डाँट और फटकार है।

"माफ़"- प्रभु जो उसे ठीक करते हैं, उसके गुनाह को भी माफ़ करते हैं।

अगर उसने गुनाह भी किए हों, वे माफ़ किए जाएँगे।

16दूसरों के विरोध में किए गए गुनाहों को मान लो, एक दूसरे के लिए परमेश्वर से माँगो, ताकि तुम स्वस्थ हो जाओ। पाप क्षमा प्राप्त व्यक्ति की प्रार्थना से बहुत लाभ होता है।

17एलिय्याह भी तो हमारी तरह एक इन्सान था। उसने लौ लगाकर माँगा कि बरसात न हो और ऐसा ही हुआ। लगभग साढ़े तीन साल तक पानी नहीं बरसा। 18जब फिर से उसने प्रार्थना की, तो बारिश हुयी और उपज भी।

19भाइयो-बहनो, यदि तुम में से कोई सच्चाई से बहक जाता है और दूसरा कोई उसे वापस रास्ते पर ले आता है, 20तो वह यह जाने कि जो कोई किसी भटके हुए को वापस लाता है, वह उसकी आत्मा को मौत नरक से बचाता है और असंख्य गुनाहों को ढाँपता है।

"अगर...हों"- ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ स्थितियों में बीमार आदमी के गुनाह की वजह से बीमारी आती है। 1 कुरि. 11:30 से तुलना करें। - यहाँ कुछ गुनाहों के लिए 'कमज़ोरी या बीमारी' परमेश्वर की तरफ़ से डाँट और फटकार है।

"माफ़"- प्रभु जो उसे ठीक करते हैं, उसके गुनाह को भी माफ़ करते हैं।

5:16 "मान लो"- यहाँ किसी धार्मिक गुरू के सामने किए गए अंगीकार की बात नहीं है लेकिन एक दूसरे के सामने यह हमारे रोजमर्रा की संगति का एक हिस्सा होना चाहिए, खासकर जब कोई बीमार होता है। आपसी खुलापन, प्रेम, स्वीकारना आदि होने की जरूरत है। यीशु पर विश्वास करने वाले सभी पुरोहित हैं 1 पतर. 2:5,9 हम यह न सोचें कि प्रार्थना कमज़ोर और बेकार कार्य है।

"पाप क्षमा प्राप्त व्यक्ति"- वह व्यक्ति जो परमेश्वरीय रास्ते पर चलता है। इसका मतलब जिसे मुक्ति का अनुभव है और वह परमेश्वरीय आज्ञाकारिता और इच्छा में चलता है (रोमि. 1:17; 3:21-26; 5:1; भजन 66:18; नीति. 15:29; यशा. 1:15; यूहन्ना 9:31) अगर ये दो बातें हमारे बारे में नहीं हैं तब हमारी शान्ति का हथियार बड़े काम का है। 1 थिस्स. 5:17.

5:17-18 यहाँ प्रार्थना की शक्ति या एक उदाहरण है, देखें - 1 राजा 17:1; 18:41-46. और दूसरे उदाहरण भी हैं- उत्पत्ति 20:17; 25:21; निर्ग. 8:30-31; 10:18-19; गिनती 11:2; व्यव. 9:20,25-29; 2 शमू. 15:31; 17:14,23; 2 राजा 4:32-35; अय्यूब 42:10; भजन 18:6-24; दानि. 4,20-23; योना 2:1,10; लूका 9:29; 22:31-32; यूहन्ना 11:41-44; प्रे.काम 4:31; 9:40 आदि।

"हमारी तरह"- एलिय्याह मात्र इन्सान था। माँस और हड्डी का बना था। बुरा स्वभाव उसके पास था। परीक्षा और प्रलोभन उसके सामने भी थे। ईश्वरीय शक्ति से ही वह कुछ कर सकता था। यदि वह इस तरीके का इस्तेमाल कर सकता था तो हम भी कर सकते हैं, यदि हम भी सज़ा मुक्त हुए हैं और खरा जीवन जीते हैं।

5:19 "भाइयो-बहनो"- यीशु के मानने वालों से वह बात कर रहा है। हम यह नहीं कहेंगे कि वहाँ सभी सच्चे विश्वासी थे। अधिकांश बड़े झुण्ड में कई तरह के लोग होते हैं

- कुछ मुक्ति पाए हुए लोग होते हैं
- कुछ सच्चाई पर चलते और खरा जीवन बिताते हैं।
- ऐसे झुण्ड में यह संभावना बनी रहती है कि कोई भी कभी भी सारी सच्चाई को पूरी तरह से छोड़ दे (1 तीमु. 1:6; 6:10,21; 2 तीमु. 2:18; 2 पतर. 2:15)। ऐसे लोगों को वापस सत्य में लाना मुश्किल है, लेकिन याकूब कहता है, संभव है।

5:20 "मौत (नरक)"- आत्मिक मृत्यु, परमेश्वर से अलग (यूहन्ना 5:24; इफ़ि. 2:1)। उस से किसी को बचाना, सच में बड़ी बात है। जब ऐसा होता है तब बचाए हुए व्यक्ति के सारे गुनाह परमेश्वर की निगाह से दूर कर दिए जाते हैं, वह भी हमेशा के लिए (भजन 103:12; मीका 7:19)